

**B.A Part-1 Paper-1 study material during lockdown by  
Dr. Prabha Shree (Guest Faculty Psychology deptt,  
Vaishali Mahila College, Hajipur)**

**contact class date: 21.05.2020**

---

## अभिप्रेरणा का अर्थ एवं स्वरूप

(Meaning and nature of Motivation)

सामान्यतः यदि हम देखें, तो अभिप्रेरणा एक ऐसी अवस्था होती है, जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। दिन प्रति दिन के जिंदगी में हम लोग अनेक प्रकार के कार्य करते हैं हम इन कार्यों को क्यों करते हैं? शायद इसलिए करते हैं क्योंकि इसके पीछे कोई ना कोई अभिप्रेरणा अवश्य होता है। अभिप्रेरणा से सामान्य अर्थ वैसी अवस्था से होता है जो व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है मनोवैज्ञानिकों द्वारा अभिप्रेरणा की कई परिभाषाएं दी गई हैं कुछ परिभाषाएं इस प्रकार हैं-

Baron, Byrne & Kantowitz (1980) के अनुसार, “ मनोविज्ञान में हम लोग अभी प्रेरण को एक काल्पनिक आंतरिक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करते हैं जो व्यवहार करने के लिए शक्ति प्रदान करता है तथा एक खास उद्देश्य की ओर व्यवहार को ले जाता है”।

Witting & William III (1984) के अनुसार, “अभी प्रेरणा से तात्पर्य एक प्रेरक तथा कर्षण बल से होता है जो खास लक्ष्य की ओर व्यवहार को निरंतर ले जाता है”।

Lefton (1979) के अनुसार, “अभिप्रेरक प्राणी के भीतर एक ऐसी सामान्य अवस्था है जो लक्ष्य-निर्देशित व्यवहार उत्पन्न करता है। प्रणोदो, आवश्यकता एवं इच्छाओं से उत्पन्न यह एक कल्पित अवस्था है”।

मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा का विश्लेषण कर इसके निम्नलिखित लक्षण बताए हैं-

- अभिप्रेरणा व्यक्ति की एक आंतरिक अवस्था को कहा जाता है। यह आंतरिक अवस्था काल्पनिक होती है। अतः इसे व्यक्ति के शरीर के भीतर ठोस रूप से देखा नहीं जा सकता है।
- अभिप्रेरण में जो आंतरिक अवस्था होती है उससे व्यक्ति में कुछ क्रियाएं उत्पन्न होती हैं।
- अभिप्रेरण में उत्पन्न क्रियाएं एक निश्चित दिशा में यानी उद्देश्य की प्राप्ति की ओर बढ़ता हड़सका मतलब यह हुआ कि प्रत्येक अभिप्रेरणा में एक निश्चित लक्ष्य होता है जिसकी ओर व्यक्ति का व्यवहार प्रेरित होता है।
- अभी प्रेरित व्यवहार उत्पन्न होने के बाद उद्देश्य की प्राप्ति तक वह जारी रहता है।

उदाहरण द्वारा अभिप्रेरण के स्वरूप की व्याख्या हम इस प्रकार कर सकते हैं-

मान लिया एक व्यक्ति है जिसे भूख लगी है और वह किसी होटल में जाकर अपनी भूख को मिटाता है। यदि इस उदाहरण कि हम विस्तृत व्याख्या करें तो हम पाएंगे की अभिप्रेरण में उपरोक्त वर्णित चारों गुणों का समावेश है। यहां भूख व्यक्ति की आंतरिक अवस्था है जिसे बाहर से देखा नहीं जा सकता है (पहला कारक) । इसे मनोवैज्ञानिकों ने आवश्यकता (need) की संज्ञा दी है। यह आंतरिक अवस्था व्यक्ति में कुछ विशेष क्रियाएं जैसे होटल ढूंढना, होटल में जाकर भोजन के बारे में पूछताछ करना आदि उत्पन्न करता है (दूसरा कारक)। इस तनाव एवं क्रियाशीलता की अवस्था को मनोवैज्ञानिकों ने प्रणोद (drive) की संज्ञा दी

है। व्यक्ति द्वारा किए गए सभी क्रियाएं कुछ ऐसी होती हैं जो एक निश्चित दिशा में एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति की ओर ले जाता है (तीसरा कारक)। इस उदाहरण में निश्चित लक्ष्य भोजन की प्राप्ति है। इसे मनोवैज्ञानिकों ने प्रोत्साहन (incentive) की संज्ञा दी है। व्यक्ति में क्रियाशीलता की अवस्था तब तक पाई जाती है जब तक कि उसे भोजन प्राप्त नहीं हो जाता है। इस तरह से हम देखते हैं कि मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरण के स्वरूप की व्याख्या तीन मूल तत्वों द्वारा की है- आवश्यकता (need), प्रणोद (drive) तथा प्रोत्साहन (incentive)। इसे मनोवैज्ञानिकों ने आवश्यकता-अन्तर्नोद-प्रोत्साहन (need-drive-incentive) सूत्र भी कहा है।